Quest Journals
Journal of Education, Arts, Law and Multidisplinary
Volume 15 ~ Issue 3 (May - June 2025) pp: 95-99
ISSN(Online): 2347-2895
www.questjournals.org

Research Paper

मानवीय संवेदनाक संवाहक

अम्बिका कुमारी

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा

आधुनिक मैथिली साहित्यमे समर्पित साहित्यकारक एकटा समूह विद्यमान अछि। एहि समूहमे समर्थ, श्रेष्ठ आ समर्पित साहित्यकार रुपें एकटा जे नाम अछि- ओ नाम अछि- डॉ. महेन्द्र नारायण रामक। ओ एहि मादे निरंतर अपन संघर्षशीलतासँ जोति-कोड़िकैं अपन श्रम-स्वेद-कर्मसँ संदर्भित साहित्यकैं अभिसिंचित कयलनि अछि। (सुधार: 'कथासँ' को बदलकर 'कर्मसँ' किया गया) इएह कारण अछि जे हुनक वृत्तिमे अक्षत साधनाक सौरभ, अध्ययनक तप आ ऊर्जास्वित्ताक दीप्ति केर उर्ध्वमुखी प्रसार परिलक्षित होइत अछि।

धुनक पक्का आ लगनमे लीन रहऽबला सतत जिज्ञासु आ जागरुक महेन्द्र जी नामे केर महेन्द्र नहि, अपितु रचनाधर्मिता, मौलिक आ चिरस्थायी लेखन लेल ओ साहित्य-संसारक महेन्द्र सेहो छथि। हुनक धवल कृतित्व सहितो भवि : साहित्यक केर आदर्शाक अनुगामी अछि। निश्चित रुपें महेन्द्र जीक साहित्य मानवीय संवेदनाक संवाहक, सार्थक स्निग्ध आ चारुतापूर्ण अछि।[1]

प्रतिभा कवित्वक बीज होइत अछि। प्रतिभा प्रयास आ पाण्डित्यकैं पाबि प्रफुल्ल होइत अछि। महेन्द्र जीक जन्मजात प्रतिभा हुनका बहुदर्शी आ बहुकर्मी बनौलनि अछि। आइ ओ एक भावुक कवि आ मनस्वी गद्य स्रष्टा छथि।

महेन्द्र जीक साहित्यमे अपन संस्कृति आ सभ्यता, अपन परम्परा आ रीति-रेवाज़क प्रति अनुराग भेटैत अछि, प्रेम अछि- गाम-घरक माटि-पानिसँ आ ओहिठामक लोक समाजसँ। हुनक कवि हृदयमे पीड़ित ओ प्रताड़ित, पिछड़ल ओ पछड़ल अभिव्यंजित आ उपेक्षित मानवताक प्रति करुणाक महत्त्व समाहित रहैत अछि। एहि क्रमे ओ मिथिला आ मैथिलीक शीर्ष भक्त छथि, हुनक अर्चनामे प्रणत छथि तऽ ओहि भावमे राष्ट्र आ राष्ट्र-भारतीक अभ्यर्थनामे नतानन छथि। ओ प्रेरक ओ अनुकरणीय छथि।

डॉ. महेन्द्र नारायण राम केर मनमे भाषाक रुढ़ि के लऽ कऽ कोनो ग्रंथि नहि अछि। ओ मैथिलीक भावुक आ द्रवणशील कवि आ मस्त गायक केर रुपमे सुख्यात छथि। हुनकर कविता सबमे लोक-वाणीक संगहि लोक साहित्य प्रति आग्रह रुद्य भेटैत अछि कांची नाथ झा किरण जन्म दिवस-समारोह केर उपलक्ष्यमे हुनका द्वारा पढ़ल गेल कविताक निम्न अंश देखल जा सकैत अछि–

हे युग पुरुष...
मैथिली-मिथिलाक हे गौरव-सौरभ
अपनेक देल लोक वाणीक रंगसँ
अपन टूटल-फूटल घरकँ डौरब
बढ़ैत रहत डेग, चलैत रहत लेखनी
दनदनाइत रहत हमर ई लोक साहित्य सृजन।[2]

समकालीन संदर्भमे बेगारी वा न्यूनतम मजदूरी विरुद्ध दीनामद्रीक संघर्षक महत्व असंदिग्ध नहि अछि। एहि प्रसंगे कवि महेन्द्र नारायण जी बहुत सहज ढंगसँ संदर्भित कवि 'जोरावेर सिंहमे' रेखांकित कयलनि अछि–

कुनौली बाजारक राजपूत
बहु कठोर, बहु चंडाल

बहु राड़, नोर मुसहर सभक फहराबय
सभ दिनसँ खढ़ कटाबय
राति-राति भरि सताबय
सुग्गत बोनि लेल कलपाबय
ककरो आँटी, ककरो पाँजड़ि
भरि बोझा लेल ललचाबय।[3]

जखन दीना भदड़ीकँ एहि शोषणक पता लगै छै तऽ दुनू भाय जोरावेर सिंहसँ लड़बाक मादे कुनौली बाजार जाइत अछि। ओतुका शोषक दृश्य देखि दुनू भाइकँ तरबाक लहरि माथा ठेंकि जाइत छनि। तकराबाद दुनू भाय जोरावेरक जे दुर्गति करैत छथि तकर बहुत जीवंत वर्णन उक्त कवितामे देखल जा सकैत अछि–

एक्के बेर झटका झटकैत छथि 'भद्री'
उलंगी पहाड़पर जा चारु नाल चित्त
बेहोश भए खसि पड़ल जोरावेर
दुनू हाथे ऊपर उठा भद्री
जमीनपर पटकैत दैत छथि
छातीपर चढ़ि जाड़त छथि
पछाड़ि दैत छथि डाँड़सँ छाड़ि निकालि
चट्ट दऽ मूड़ी छोपि लैत छथि
आ जुमा कए दूर फेकि दैत छथि।[4]

एक दिस हिनक 'जागि गेल छी', 'लोक काव्य-कुसुम' आ 'दामिनी' नामक कविता संग्रह प्रकाशित अछि तऽ दोसर ई कहब आवश्यक जे 'गद्य' कवि प्रतिभाक कसौटी अछि। उल्लेखनीय अछि जे ओ लोक विषयक गंभीर अध्ययन आ लोक चेतनाक पुरोधा साहित्यकार रुपँ उद्धरणीय छथि। एतदविषयक हुनकर चर्चित कृति अछि– 'लोक-दर्शन, लोक-संदर्भ, लोकाञ्जन, लोक-संस्कृतिः, स्वरुप एवं सौंदर्य' आदि जाहिमे लोक कर्मकँ समझबाक, बुझबाक आ ओकर प्रचार-प्रसार लेल ई सभ पोथी बहुत उपयोगी अछि।

इहो उल्लेखनीय अछि जे सतरह संस्मरणक संग्रह अछि– 'जेना जनलियनि।' विशद क्षेत्र संख्यानुरुप चरित्रकँ चित्रित करऽवला एहि संस्मरणकँ सुगढ़ गद्य पाठककँ चमत्कृत करऽवला अछि। 'जे हम जनलहूँ', 'रुकलऽ तऽ नहि', 'मोन बेकल अछि', जेहन संस्मरणकँ पढ़ि कऽ मन सहजहि अभिभूत भऽ जाइत अछि। शब्द सभक सुष्ठु प्रयोग, शैलीक बाँकपन, भाषाक-प्रांजलता, अभिव्यक्तिक प्रगुणित प्रगल्भता, ललित-संचलित ई संस्मरण सुढ़ढ़ पाठककँ भिन्न-भिन्न रसक अनुभूति करबैत दूर-दूर धरि हुनकर कल्पनाकँ उड़ा लऽ जेबामे सक्षम अछि। लेखकक ई शिल्पीय कौशल अद्भुत आ प्रशंसनीय बनबैत अछि।

एहि संदर्भित संस्मरणक किछु उदाहरणक एहिठाम राखब समीचीन होयत–

पत्रकारिता आ साहित्यिककारिताक ध्रुवतारा, 39 वर्षक अवस्थामे अगस्त्यायनी महाकाव्यपर साहित्य-अकादमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत संग्रहहि कतोक पोथीक वरेन्य रचनाकार छलाह श्रद्धेय मार्कण्डेय प्रवासी। हिनक निधन 13 जून, 2010 कँ भऽ गेलनि आ सिमरियामे दाह-संस्कार। हिनकासँ डॉ. महेन्द्र नारायण रामक साहित्यिक सम्पर्क। डॉ. राम हिनक दाह-संस्कारमे संग रहलाह। एतदर्श हिनकापर 'मोन बेकल अछि' शीर्षकक संस्मरण लिखलनि। ओ एहि क्रमे कहैत छथि–

दिन 12 बजेक लगपास। श्री हीरेन्द्रजीसँ फोनपर सूचना भेटल जे 'मार्कण्डेय प्रवासी' नहि रहलाह आ हुनकर लहास पटनासँ ग्राम गरुआरा लाओल जा रहल अछि। दाह-संस्कार सिमरियामे हयत। मोन बेकल भऽ उठल। तुरत फोनमेहताजी के लगौलियनि आ दाह-संस्कारमे शामिल होयबाक लेल प्रोग्राम तय भेल। तुरत बोलेरो कयल गेल।

गाड़ी खोलबाक स्थान निर्धारित भेल– 'जखन तखनक' सम्पादकीय कार्यालय। ई कार्यालय 'प्रवासी'जीक ज्येष्ठ बेटी जमाय ज्योत्स्ना चन्द्रम-विभूति आनंद क निवास स्थान अछि। दरभंगा स्टेशनसँ दक्षिण म्यूजियम गुमटी लग सटले पूब। जमा होबऽमे बिलम्ब भेल।

बिलम्बे 'बोलेरो' खुजल। गाड़ीपर विभूतिजी आ हुनकर पुत्र प्रत्यूष (अप्पू) सेहो चढ़ल। गाड़ी डी. एम. सी. एच. क बाह्य विभागक आगाँ दैनिक जागरण कार्यालयमे रुकल। अमलेन्दुजीक खोज-खबरि लेल गेल। समयक किल्लतक कारणे ओ कहा पठौलनि जे 'हम पाछौँ से आबि रहल छी, अहाँ सब बढ़ू।' बोलेरो बढ़ि गेल। मुदा लहेरियसराय टावरसँ पहिने फोनपर खबरि भेल जे आबि रहल छी, आगू ठाढ़ होउ। गाड़ी टावरपर रोकल गेल। बेस विलम्बसँ अमलेन्दुजी एलाह। आठ-साढ़े-आठ लगपास गाड़ी खुजल।

हमरा सभ के प्रवासीजीक गाम गरुआरा जेबाक छल, मुदा बाटमे खबरि विभूतिजीके भेलनि जे लहास सिमरिया विदा भऽ गेल अछि। समस्तीपुर कचहरीक सोझाँ भेंट होयब। समस्तीपुरसँ गाड़ी बढ़ि गेल छलैक। हमहूँ सभबढ़िते गेलहुँ। यद्यपि खबरि भेटल जे आगू सातनपुर पेट्रोल पम्पपर संग भऽ जायब, मुदा से ततहुँ नहि ठहरलाह। ओम्हर सिमरियामे अधरतिया अर्थात् 12 बजेसँ एक बजेक बीच लहास जरेबाक नियम नहि छैक तैं सब गोटे द्रुत गतिये भागल जा रहल छलाह जे समयपर पहुँच जाइ।

हमरा सभक बोलेरो राजेन्द्र पुलपर लागल। पुनः गाड़ी घुमाक निचा उतारल गेल। सीधे मिथिला होटलक सोझाँ लगाओल गेल। कनेक देर ठहरलाक बाद पता चललैक जे ओहो सब आबि गेलाह, मुदा दोसर बाट होइत गंगाक किनार चल गेलाह। फोनसँ प्रवासीजीक भाय पत्रकार शिवचन्द्र बाबू सँ बात भेल। ओ कनेक देरमे आबि हमरा सभकेँ संग कऽ, ओहि ठाम लऽ गेलाह। नजरि प्रवासीजीक लहासपर पड़ल। मोन बेकल भऽ उठल।

देखलहुँ प्रवासी जीकँ गंगा स्नान कराओल जा रहल छलनि। गंगा स्नान करा किछु कर्म केलाक बाद अछियापर प्रवासीजी राखल गेलाह। लकड़ी-जारनि देल गेलनि। आ पुत्रके उज्जर नूआँ पहिरा अछियाक चारुकात घुमाओल गेलनि। ओहि संग आओरो लोक घुमल आ फूलादि-चढ़ौलक। पुत्रकँ मुखाग्नि देबाक लेल कहल गेलनि। हमहूँ सहटि कऽ लगीच गेलहुँ। विशाल ललाट, कान्तियुक्त मुखमंडल, एहू उमेरमे एकोटा केस पाकल नहि, कारी-कारी झमर-झम्मर केश एहिना देखा रहल छल जेना प्रवासी जी कहि रहल होथि– "अहाँ सब जनि घबड़ाउ। हम अवश्य एहि शरीरके छोड़ि चलि जा रहल छी, मुदा-

"जहिया-जहिया हृदयहीनता
खटकत मोनक बाटपर
हम भेटब–
इतिहास-नदी केर–
चिक्कन-चुनमुन घाटपर।

× × ×

जहिया-जहिया
शील तथा आदर्श गीतमे नहि उभरत
हम भेटब–
अपने सिमानपर
बैसल टूटल खाटपर।

× × ×

जहिया-जहिया मैथिलत्व
हारल, धकिआओल-सन लागत,
हम भेटब–
तिलकोर जकाँ
चतरल साहित्यक टाटपर।

अछिया धकऽ लागल। हम सभ कनें दूर हट हटि बैसि गेलहुँ।[5]

एकटा छलाह– पं. चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर'। पं. अमर जी कवि, कलाकार उपन्यासकार, एकांकीकार, निबंधकार, इतिहासकार सब एक्के रूपें छलाह। आचार्य सुमन जी हिनका सम्बन्धमे लिखैत छथि–

कौलिकतेँ वैयाकरण

वृत्तिए शिक्षक

रुचिमे कवि

साधने पत्रकार

ओ परिमार्जित शैलीक लेखक।

गद्य, पद्य, एकांकी, नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण साहित्य शतदलक प्रत्येक दलपर अमरजीक स्मरणीयता सुरभित भेटैत अछि। जहिना लेखन, तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिन प्रचारण-प्रसारण जहिना शोध-संधान तहिना संग्रह संकलन, प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतुल भेटैत अछि।

एहन पंडित जीक संग साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडलमे डॉ. राम पाँच वर्ष धरि सदस्य रहलाह। एहि क्रमे 'पाँच वर्ष' नामक शीर्षकसों हुनकर स्मरण लिखलनि जाहिमे मानवीय संवेदना सुस्पष्ट अछि।

एक अंश द्रष्टव्य– रायपुरमे व्यवस्थापक छलाह **श्री शोभाकांत झा**। लोक विविध स्वरमे उपस्थित कलाकार छलाह– **प्रो. रामसेवक ठाकुर**, **प्रो. कुंज बिहारी मिश्र**, **कन्हैयाजी**, **उषा पासवान** आदि। बैसार, कार्यक्रमक अतिरिक्त सम्मान समारोह छलैक। एहि अवसरपर पंडितजीक संग हमहूँ सम्मानित भेल रही। एहि अवसरपर सेहो ओ कहने छलाह–

बाँसक खुट्टापर जकर बड़ेरी टेकल छै,
ताही फुसक घरपर ई चिनगी फेकल छै।
धकैत कते लागतै देरी देखत दुनियाँ
जे ओलटिक धधरा बढ़ि मथनी धरि ठेकल छै।

× × ×

देलकै के देशक सब इनारमे भाङ घोरि?
नैतिकता केर हत्या कय सत्यक टाङ तोड़ि,
देलकै समाजकै भुस्सा थड़ि बैसाय हाय।
अपनो समाडकैँ रहलै अपन समाङ छोड़ि,
दुर्बुद्धिक द्वार फुजल सबतरि सद्बुद्धिक बाटे छेकल छै।

कार्यक्रम समाप्तिक पश्चात घुरडकाल जखन ट्रेनसँ समस्तीपुर उतरलहुँ तऽ पता चलल जे ट्रेन दरभंगा नहि जाइछ। बाढ़िक पानि पटरी पार करैत छैक। पता चलल जे टैक्सी जटमलपुर जाइत छैक। सभगोटें धड़फड़ीमे चढ़ि जटमलपुर एलौँ तऽ अफरा-तफरी छलैक। इहो सुनल गेलैक जे नाव डूबि गेलैक। लोकके सहास नहि भेटि रहल छलैक। टैक्सीसँ घुरि एलौँ। हमर छोट भाय **मुखलाल** समस्तीपुरमे दारोगा छलाह। रिटायरिंग रुमक कोठरी खोलाओल गेल। सब गोटे ओहिमे रहलहुँ। अपूर्वामे भोजनक व्यवस्था कयल गेलैक। बीच-बीचमे **डॉ. तरुण, प्रभाकरजी, नरेश कुमार** विकलक संग समस्तीपुरक साहित्यकार लोकनि भेंट करबाक लेल अबैत रहलाह, मुदा तइयो पंडितजी के संतोष कतऽ। पता ई चलल जे दरभंगा शहरमे पानि चलि आयल अछि।[6]

एकटा व्यक्तित्व छलाह– **डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'**। डॉ. महेन्द्र नारायण राम, हिनका लोक साहित्यिक पुरोधा, जार्ज ग्रियर्सन ओ मणिपद्मक बाद मानैत छलाह। मौन जीक सानिध्य डॉ. रामकैँ जीवन काल धरि भेटलनि। डॉ. राम 'धन्य मानै मूर्धन्य' नामे एकटा संस्मरण लिखलनि जाहिमे डॉ. रामक मानवीय संवेदनाक झलक भेटैत अछि। एहिठाम ओहि संस्मरणक किछु अंश द्रष्टव्य जखन ओ डॉ. रामक डेरापर आयल छलाह आ हुनका संग छलनि श्री ओम प्रकाश पांडेय। यथा–

मौनजी अपना संगे श्री ओमप्रकाश पांडेय के लौने छलाह। पांडेयजी हुनकर सहयोगी। मौनजी बुद्ध आ पौराणिक स्थल विशेषमे बेसी रुचि रखैत छथि। काजो बहुत केने छथि। एहि काजमे के.पी. जायसवाल शोध संस्थान ओ फेर पांडेयजीक संग अंतरंगता छैक। ओ पांडेयजी के बारेमे कहने छलाह–

ई छथि श्री ओम प्रकाश पांडेय। पटना म्यूजियममे टेक्नीकल पदाधिकारी ओ इतिहास आ संस्कृतिसँ सम्बद्ध छथि।

हम हुनकर अभिवादन केने छलियनि।

ग्यारह बजे राति धरि मौनजीसँ दलित, दलित साहित्य, शिष्ट साहित्य, लोक साहित्य, मैथिली साहित्य विषयक ज्ञान अर्जन करैत रहलहुँ। मैथिली साहित्य ओ साहित्यकारक चर्चा-परिचर्चा, आहार-व्यवहार, जाति, परजाति, सामाजिक-राजनीतिक विषय-वस्तुपर हमरा ओ खास रुपे अवगत करबैत रहलाह। एहि क्रमे खासकऽ लोकगाथा विषयक विषय वस्तुपर गंभीर विमर्श चलि पड़ल, जाहिपर हमर किछु प्रश्नावलीपर ओ हमरा संतुष्ट करैत रहलाह। ओ जे हमरा जवाब देने रहथि ताहिसँ हम आओर सक्रिय भेल रही आ ओ हमरा लेल संजीवनीक काज केने छल। लोकगाथाके केन्द्रमे राखि जे प्रश्न हम हुनकासँ पुछने छलियनि तकर समाधान करैत ओ कहने छलाह–

"प्राचीन विदेह जनपद राजधानीनगर मिथिला आइ-काल्हि सांस्कृतिक जनपदक रुपमे अभिज्ञात अछि। गुप्तकालीन शासनकालमे नदी वेष्टित अछि जनपदक राजकीय पहिचान तीरभुक्ति (तिरहुत), मिथिलांचलक भौगोलिक पर्यायक रुपमे विशिष्ट अछि। एहि जनपदक पूर्वी सीमांत कोशी-महानंदा (पूर्णियाँ) एवं दिक्पति सूर्य दलित गाथा नायक ज्योति ओ कारिख पजियारक इष्ट छथि। पश्चिमी सीमांतपर गण्डक (लौरिया नंदनगढ़क बौद्ध बिहार) एवं दिक्पति मीरा सुल्तान 'मीरायण' नामक गाथाक नायक छथि। मिथिलांचलक उत्तरी सीमांतपर हिमालयक पाद प्रदेश अवस्थित अछि एवं उत्तरक दिक्पाल राजा भीमसेन दलित दुसाधक गाथा 'सलहेस'क स्मरणीय पात्र छथि। दक्षिणी सीमांतपर गंगा स्वयं दक्षिणक दिक्पाल बनल छथि। एवं प्रकारे मिथिलांचल कोशी-महानंदा, गण्डक, गंगा ओ पाँच बहिन कमलाक लीला भूमि बनल अछि। कमला मल्लाह लोकनिक गाथा नायक दुलरा दयाल सिंहक इष्ट छलीह। गाथा गायनसँ पूर्व दिक्पति वंदना, सुमिरन एवं भगैतक विधान अछि। श्रीमान्! लोकगाथाक सम्बन्धमे कहल जाउ, खासक मैथिली लोकगाथा?

लोकगाथा वस्तुतः लोक ओ गाथाक समन्वित रुप थिक। महाकाव्यमे लोक ओ वेदक भिन्नता स्पष्ट अछि अर्थात लोक वेदसँ भिन्न अछि। अतः लोकगाथा वेदेतर लौकिक एवं गेय आख्यान अछि जाहिमे लोक जीवनक प्रायः समस्त सांस्कृतिक तथा सामाजिक भाव आच्छादित अछि। मैथिलीक लोकगाथा लवहरि-कुशहरि, छत्तीसगढ़क पण्डवानी एवं अवधिक 'चन्दायण'क मूल जनपदकीय रुपमे उपलब्ध छल, जाहि से उत्प्रेरित भवभूतिक उत्तम राम चरित चन्दायण आदि प्रेमकाव्यक रचना भेल। मैथिलीक आलोच्य गाथा सबमे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक परिवेश, आमोद-प्रमोद, रीति-रेबाज, पावनि-तिहारि आदिक लौकिक अवधारणा अभिव्यंजित अछि। आश्चर्य अछि, आभिजात्य वर्गक कथा-धरित गाथा सब सवर्णोत्तर समाजमे जतेक लोकप्रिय ओ परम्परित अछि ओतेक सवर्ण समाजमे नहि।[7]

निष्कर्षतः ई कहल जा सकैत अछि जे डॉ. महेन्द्र नारायण राम, मानवीय संवेदनाक प्रबल संवाहक छथि। हिनक प्रत्येक रचनामे मानवीय संवेदना भरल-परल पाओल जाइत अछि।

संदर्भ–

1. डॉ. महेन्द्र नारायण राम, जागि गेल छी, दरभंगा : मैथिली अकादमी, 2008, पृ. 20
2. डॉ. महेन्द्र नारायण राम, लोक काव्य कुसुम, अनुप्रास प्रकाशन- 2024, भूमिका डॉ. रंगनाथ दिवाकर
3. वएह
4. वएह
5. डॉ. महेन्द्र नारायण राम, जेना जनलियनि, वर्ष, पृ. 20
6. डॉ. महेन्द्र नारायण राम, पाँच वर्ष अथवा संबंधित संस्मरण-संग्रह, पृ. 25